किन्नर विमर्श

शिक्षा, समाज और साहित्य

प्रधान संपादक
डॉ. विन्द कुमार चौहान

संपादक
संगीता कुमारी पासी
देवेन्द्र चौहान

किन्नर विमर्श

शिक्षा, समाज और साहित्य

प्रधान संपादक

डॉ. बिन्द कुमार चौहान

संपादक

संगीता कुमारी पासी

जैनेन्द्र चौहान

हंस प्रकाशन

नई दिल्ली (भारत)

प्रथम संस्करण : 2022

ISBN : 978-93-91118-02-0

© संपादकगण

मूल्य : [illegible]

प्रकाशक

हंस प्रकाशन

(पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स)

बी-336/1, गली नं. 3, दूसरा पुस्ता,
सोनिया विहार, नई दिल्ली-110094
दूरभाष : 9868561340, 7217610640
E-mail : hansprakashan88@gmail.com
Website : www.hansprakashan.com

विक्रय कार्यालय :
4648/21, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002
दूरभाष : 7217610640

टाईप सेटिंग : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली-94

मुद्रक : एस. के. ऑफसेट, दिल्ली

अनुक्रमणिका

समर्पण (v)

सम्पादकीय (vii)

1. संस्कृत साहित्य एवं किन्नर : एक अध्ययन 1
–डॉ. डॉली जैन

2. अंधेरों से संघर्ष करता एक उपेक्षित दिया : 'यमदीप' 13
–डॉ. नीता त्रिवेदी

3. किन्नर समाज - उत्थान में साहित्य का योगदान:
"किन्नर : मुनिया मौसी" के विशेष संदर्भ में 22
–डॉ. प्रभा शर्मा

4. किन्नर समुदाय और उनकी संस्कृति 33
–संगीता कुमारी पासी

5. किन्नर समाज का दर्द और अपेक्षित आकांक्षाएँ
(हिन्दी कथा साहित्य में व्याप्त किन्नर वर्ग की
समस्याओं के विशेष संदर्भ में) 40
–डॉ. सुरेश कुमार बैरागी

6. समाज और साहित्य में किन्नर 48
–डॉ. लूनेश कुमार वर्मा

7. हिन्दी कहानियों में किन्नर विमर्श 55
–डॉ. उदय भान भगत

2

अंधेरों से संघर्ष करता एक उपेक्षित दिया : 'यमदीप'

डॉ. नीता त्रिवेदी

हमारी दुनिया के समानांतर चलती एक उपेक्षित दुनिया जो हमारे आसपास होते हुए भी, नजरों से दृष्टिगत होते हुए भी, हमारे दृष्टिकोण का हिस्सा नहीं बन पाती। यह दुनिया हमारे आसपास चलते-रहते-जीते नजर तो आती है पर हमारे विचारों तक उस दुनिया की पहुंच नहीं है। हां, एक पूरी की पूरी दुनिया हमारे आसपास ताली बजाती हुई, हमारे मांगलिक उत्सवों पर खुशियां मनाते हुए दुआएं देती और नेग लेकर गाती बजाती हमारे आसपास चलती है, किंतु यह हमारे लिए केवल भय, कौतूहल और घृणा का ही भाव उत्पन्न करती है विमर्श का नहीं। जी हां मैं बात कर रही हूँ– किन्नर समाज की जो सदियों से उपेक्षित, संघर्षशील रहा है। इस समाज में रहता हुआ समाज से दूर। यह समाज सृष्टि की उत्पत्ति से ही हमारे मध्य रहा है। सभ्यता के विकास के साथ मानव ने कई स्तरों पर उत्तरोत्तर प्रगति की है किंतु यह समाज आज भी अपनी अस्मिता के लिए संघर्षरत है। विमर्श के इस दौर में किन्नर विमर्श पर भी साहित्य ने सुधि ली है जिस कारण से इनके जीवन संघर्ष, यातनाओं-भावनाओं आदि ने बौद्धिक मानस पर अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई है।

[illegible] में किन्नर विमर्श पर नीरजा माधव कृत 'यमदीप' [illegible] हिंदी साहित्य में अब तक ज्ञात प्रकाशित उपन्यासों में [illegible] [illegible] हुआ है। समकालीन स्त्री साहित्यकारों में नीरजा माधव [illegible] [illegible] है। आपने कथा साहित्य एवं कथेतर गद्य साहित्य में [illegible] [illegible] एक अलग विशिष्ट पहचान बनाई है। आपने [illegible] [illegible] चिंतन प्रस्तुत किया है। आपके कहानी संग्रह हैं 'चिटके [illegible]', 'अभी ठहरो अंधी सदी', 'आदिम गंध तथा अन्य [illegible]', '[illegible] रोता नहीं', 'पथदंश', 'वाया पांडेपुर चौराहा', [illegible] प्रसिद्ध उपन्यास हैं 'यमदीप', 'तेभ्यः स्वधा', 'ईहामृग', '[illegible] कॉन्स्टेबल की डायरी', 'अनुपमेय शंकर', 'गेशे जम्पा', '[illegible] के अहेरी', 'धन्यवाद सिवनी', 'रात्रिकालीन संसद'। आपके निबंध [illegible] हैं '[illegible] चित मन महुआ', 'रुकोगी नहीं भागीरथी', 'सांझी फूलन [illegible]', 'यह राम कौन है'? 'प्रस्थानत्रयी' नाम से आपका एक काव्य संग्रह भी प्रकाशित हुआ है। आपका रचना कर्म आपकी बहुमुखी प्रतिभा को अभिव्यक्त करता है। आपकी औपन्यासिक कृति 'यमदीप' सन 2002 में प्रकाशित उपन्यास है। यह उपन्यास किन्नर समाज एवं स्त्री अस्मिता पर आधारित एक महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर है।

'यमदीप' उपन्यास का शीर्षक ही पाठक को कथा की मूल संवेदना से सराबोर कर देता है। 'यमदीप' अर्थात यम के लिए जलाया गया दीप। प्रकाश-पर्व की पूर्व संध्या पर घर से बाहर घूरे (कूड़ा करकट की जगह) पर यमदीप रखा जाता है। इस दीप की कोई पूजा-अर्चना, आरती कुछ नहीं होती। यहां तक की उस दीप को रखने के बाद पलट कर उस ओर भी नहीं देखा जाता। ऐसा उपेक्षित दीप यमदीप है जो उस सांध्य कालीन घनघोर अंधेरे से अकेला ही संघर्ष करता है। प्रकाश का नन्हा स्त्रोत उस गहन अंधकार में भी कई पथिकों को मार्ग दिखाता किंतु स्वयं में अकेला जलता रहता है।

नीरजा माधव अपने उपन्यास 'यमदीप' की भूमिका में स्पष्ट लिखती है- "प्रकाश-पर्व की पूर्व संध्या में दरवाजे के बाहर रात-भर टिमटिमाते उसी यम दीपक की भांति जो उपेक्षित होते हुए भी याद दिलाता है

[illegible] यमदीप नहीं जो अपने घर के बाहर घूरे पर [illegible] है और परिवार का कोई सदस्य मुड़कर उस दिए को नहीं देख सकता क्योंकि वह दिया अभिशप्त है। परिवार का कोई सदस्य पीछे मुड़कर फिर कभी नहीं जान पाता या जानना चाहता है कि वह दिया उस कूड़े करकट भरी दुर्गंध युक्त उपेक्षित एवं गहन अंधकार में जल भी रहा है या बुझ गया है। दिये का संघर्ष उसका नितांत वैयक्तिक बन जाता है। 'यमदीप' किन्नरों के जीवन को उसकी व्यापकता, गहराई एवं संपूर्णता में व्यक्त करता एक जीवंत दस्तावेज है।

'यमदीप' में नाजबीबी तथा मानवी की कथा दो समानांतर ध्रुवों पर चलती है। नीरजा जी 'यमदीप' की भूमिका में ही मानवी के संबंध में स्त्री विमर्श का एक नया आयाम प्रस्तुत करती है– "मानवी का पूरा का पूरा स्त्री विमर्श है। अपनी अस्मिता और स्वीकार के लिए एक अंतहीन जिजीविषा लिए। आदर्श भारतीय स्त्रीत्व-गरिमा की राह से एक पग भी लड़खड़ाए बिना। पितृसत्ता के सह-अस्तित्व को बिना नकारे, अपने अस्तित्व के लिए पूर्णतया चौतन्य। स्त्री के संघर्षों और जुझारूपन को तथाकथित नारी-मुक्ति आंदोलन की आयातित दृष्टि से नहीं, बल्कि अपने बौद्धिक और तार्किक दृष्टिकोण से जांचती-परखती, पर सहानुभूति के स्थान पर स्वानुभूति से तथ्यों तक पहुंचने के बाद ही कोई निर्णय लेती हुई।"[2] मानवी उपन्यास में एक संवेदनशील पत्रकार है जो वंचितों एवं शोषितों के प्रति सहानुभूति रखते हुए उनके उद्धार के लिए प्रयत्नशील दिखाई पड़ती है। वह पारिवारिक एवं सामाजिक स्तर पर संघर्षशील रहते हुए स्त्री-अस्मिता के प्रति जागरूक नारी है।

नाजबीबी उर्फ नंदरानी भी अपने अस्तित्व के प्रति संघर्षशील, भावुक, मानवीय गुणों से ओतप्रोत, संवेदनशील किंतु सर्जक एवं सुदृढ़ व्यक्तित्व की किन्नर है। उपन्यास के प्रथम अध्याय से ही उसके भावुक मन की झलक मिल जाती है। प्रसव पीड़ा से तड़पती एक पगली स्त्री को जब सारे मोहल्ले के लोग तमाशबीन बनकर देख रहे थे। स्त्रियां अपने घरों से छुप छुप कर देख रही थी। जब कोई भी उस स्त्री की मदद को नहीं आता तब नाजबीबी अपने साथियों के साथ वहीं उसका प्रसव कराती है। प्रसव पीड़ा से जब उस पगली की मृत्यु हो जाती है और कोई भी उसकी नवजात पुत्री को नहीं अपनाता तब नाजबीबी उसे अपने साथ ले आती है। उसके साथी जब उसे लड़की को साथ ले चलने के लिए मना करते हैं तब वह कहती है– "किसके भरोसे छोड़ें वह बच्ची को? कोई पालने को तैयार नहीं। ऐसे छोड़ देने पर कहीं कुत्ते-कौवे नोंचकर... नहीं... नहीं।"[3] थोड़ी आनाकानी के बाद मेहताब गुरु उस बच्ची को नाजबीवी के साथ रहने की इजाजत दे देते हैं तथा सभी को यह हिदायत भी देते हैं कि बस्ती के बाहर किसी को भी पता ना चले कि यहाँ टेपकी (लड़की) पल रही है।

बच्ची का नाम 'सोना' रखा गया तथा नंदरानी अर्थात नाजबीवी सोना की मां बन जाती है। किन्नरों के मन की ममता, उनकी भावना, उनका मानवतावादी स्वरूप पाठकों को उनके प्रति एक नई दृष्टि देता है। वे अपने परिवार एवं समाज से कटकर अपना एक नया समाज बनाते हैं जहां मानवीय समाज की घृणा, उपेक्षा, तिरस्कार के बदले भी वे उनके प्रति अमानवीय तथा क्रूर नहीं हो सकते। नाजबीबी सोना को बड़े यत्न से पालती है तथा उसे उसी सभ्य समाज के मध्य रहने के लिए, उस के उत्थान के लिए उसे स्कूल में भी भेजती है। वह जब सोना के एडमिशन के लिए स्कूल जाती है तब चपरासी, शिक्षिकाएं तथा प्रिंसिपल तक उस पर व्यंग्य करती है, उसका मजाक बनाती है। सब कुछ होते हुए भी वह सोना को स्कूल भेजती है किंतु सोना को स्कूल में उसके किन्नर होने पर शर्मिंदा ना होना पड़े इसलिए वह छैलू किन्नर जो पुरुष ही लगता है उसे सोना को स्कूल लाने एवं छोड़ने के लिए भेजती है।

इस प्रसंग के माध्यम से लेखिका यह भी बताना चाहती है कि इसी कारण किन्नर जो कि मुख्यधारा में आने का प्रयास भी करना चाहते हैं समाज के अन्य वर्गों की तो बात ही क्या शिक्षित एवं बौद्धिक वर्ग ही उनको हीनता का बोध कराते हैं। नाजबीबी को कभी कभी अपना अतीत भी याद आ जाता है। वह सोचती है कि समाज के इन्हीं तानों एवं तिरस्कार के कारण उसे आठवीं कक्षा के बाद स्कूल छोड़ना पड़ा था। वह पढ़ना चाहती थी आगे बढ़ना चाहती थी किंतु सामाजिक उपेक्षा एवं परिवार की परेशानियों के डर से उसे स्वयं ही अपना घर छोड़कर किन्नरों की बस्ती में आना पड़ा क्योंकि उसे लग रहा था कि उसके कारण उसकी बड़ी बहन के विवाह में अड़चन आ रही है, उसके पिता को समाज में अपमानित होना पड़ रहा है। इन्हीं सब कारणों से नंदरानी स्वयं ही घर छोड़कर चली जाती है। लेखिका ने परत-दर-परत टूटते नंदरानी के मन को बड़ी ही संवेदना से उकेरा है साथ ही उतनी ही क्रूरता से समाज का घृणित चेहरा भी रखा है। कैसी विडंबना है जहां किसी किन्नर को उसका परिवार अपना रहा है, शिक्षा के द्वारा उसकी उन्नति के मार्ग खोलना चाहता है वहां सामाजिक विभेद उसे अवनति के गर्त में ढकेल देता है। नंदरानी के माता-पिता बच्ची को तब भी नहीं छोड़ते। वे नंदरानी का पता प्राप्त कर एक बार उस बस्ती में भी जाते हैं जहां उनकी नंदरानी जो अब नाजबीबी बन चुकी है, रहती है। मां तो नंदरानी की स्थिति देखते ही बेहोश हो जाती है पिता भी आंसू बहाते हैं। वे नंदरानी को वहां से निकाल कर कहीं पक्का घर बना कर देना भी चाहते हैं पर मजबूरी यह भी है कि वे नंदरानी को साथ नहीं ले जा पाते। नंदरानी के भाई-भाभी उसकी उपस्थिति उनके घर में नहीं चाहते। तब सभी किन्नर भावुक हो जाते हैं उन्हें लगता है कि किसी के माता-पिता तो उन्हें मिलने आए वरना कईयों के तो माता-पिता ने हीं उन्हें यहां छोड़ दिया था। इस स्थिति में हिजड़ों के गुरु मेहताब गुरु नंदरानी के पिता को समझाते हुए तथा वास्तविक स्थिति का बोध कराते हुए किन्नर जीवन की त्रासदी को, उनके दर्द को बयां करते हुए कहते हैं- "आप इस बस्ती में रह नहीं सकते बाबूजी, और अपनी बेटी को अपने साथ रख भी नहीं सकते... दुनिया में बदनामी और हँसी-हँसारत के डर से। हिजड़ी के बाप कहलाना न आप बर्दाश्त कर पाएंगे और ना आपके परिवार के

जोशः मूली लकड़ी होती यह काली कोतर होती, तो भी आप इसे अपने साथ रख सकते थे। इसीलिए इसे अब इसके हाल पर छोड़ दीजिए। यही उसका भाग्य था यही बदा था। सोच लीजिए, मर गई, सब्र कर लिया।"

नाजबीबी उसके साथ नहीं जाती किंतु जब उसे पता चलता है कि उसकी मां की तबीयत बहुत खराब है। उसका अंतिम क्षण निकट आ गया है, तब वह अपने आप को नहीं रोक पाती। बस्ती में बिना किसी को बताए वह अपनी मां से मिलने जाती है। रास्ते में पता लिखा कागज भी उड़ जाता है तब उसकी संवेदनाएं और मुखर हो जाती है। किसी तरह घर पहुंचने पर उसे पता चलता है कि मां की मृत्यु हो गई है तब वह शोक विह्वल हो श्मशान पहुंचती है। यह प्रसंग भी नीरजा जी ने इतना मार्मिक बनाया है जिसे पढ़कर पाठकों का दिल भी पसीजने लगता है। नाजबीबी का अपने पिता के गले लग कर रोना, भैया का समाज के समक्ष उसे अपमानित एवं तिरस्कृत करना और पिता की व्यथा तथा उसका पुनः डेरे की ओर लौटना।

उसके पश्चात नाजबीबी अपनी ममता और प्रेम का पूरा कोष सोना पर लुटाती उसी को अपना जीवन मान पूर्ण तन्मयता से उसके लालन-पालन में जुट जाती है। बस्ती में सभी का सहयोग और महताब गुरु के संरक्षण में सोना बड़ी होने लगती है। एक दिन बस्ती के बाहर कोने का एक डॉक्टर पुलिस को खबर कर देता है कि हिजड़ों की बस्ती में एक लड़की पल रही है। उसके बाद पुलिस वाले हिजड़ों की बस्ती में जाकर सब को धमकाते हैं उन्हीं के दबाव में आकर नाजबीबी को सोना को नारी उद्धार गृह में छोड़ना पड़ता है। नारी उद्धार गृह की संरक्षिका रीता देवी पुलिस एवं नेताओं के साथ मिलकर आश्रम की बालिकाओं का दैहिक शोषण करती है। नाजबीबी को जब आश्रम की स्थिति का वास्तविक परिचय अखबारों के माध्यम से पता चलता है तब वह मानवी की सहायता से सोना को वहां से निकाल पाती है। साथ ही वह इस पूरे घटनाक्रम में मानवी पर नेताओं के तथा पुलिस के दबाव से हमला भी होता है। नाजबीबी उस परिस्थिति में मानवी के जीवन को बचाते हुए उसे हॉस्पिटल भी लेकर जाती है। मानवी के माध्यम से ही आश्रम की बालिकाओं की स्थिति का पता चलता है

कि किस प्रकार कोई लड़की अपने घर की दहलीज को चाहे वह किसी भी कारण से हो लांघे तो वह पुनः अपने घर नहीं आ पाती। समाज के डर से माता पिता भी उसे वापस नहीं ले जाते और इस प्रकार शोषण के चक्र में पिसते रहना उनकी नियति बन जाती है।

'यमदीप' उपन्यास में लेखिका ने हिजड़ों के जीवन पर, उनके रीति रिवाजों आदि पर संपूर्ण प्रकाश डाला है। लेखिका हिजड़ों के समाज से अलग थलग रहने, उनके मुख्य धारा से ना जुड़ पाने के साथ उनके सामाजिक स्तर पर भी चर्चा करती है। उनकी आय का मुख्य साधन मांगलिक अवसरों पर नाचना गाना, बधाई मांगना है। यजमान द्वारा जो मिल जाए उसी पर उन्हें आश्रित रहना पड़ता है। समाज के आधुनिकीकरण से इन पर आर्थिक संकट आ रहा है। इसके अतिरिक्त रोजगार इन्हें कोई देता नहीं अतः मजबूरन इन्हें देह व्यापार, भीख, डराकर लूटना आदि कृत्य करने पड़ते हैं। इसी संदर्भ में लेखिका कहती हैं– "धंधों में आ रही इस गिरावट को देखते हुए गिरिया रखने तक की छूट तो अब ना चाहते हुए भी स्वीकृति पा चुकी थी उनकी बस्ती में। समलैंगिक भूख से बेचैन कोई-कोई समर्थ पुरुष जो इसका कोती (स्त्री वेशधारी हिजड़ा) के रूप में भरण पोषण कर सके, इसके लिए अपनी इच्छित या अनिच्छत स्वीकृति कोई भी हिजड़ा दे सकता था। पेट पालने की इसी विवशता में कितने तो छिपे मुंदे तौर पर इसे वेश्यावृत्ति की तरह अपना चुके थे, क्योंकि एक तो गिरिया कम लोग बनते थे और दूसरे केवल गिरिया द्वारा दी गई सीमित धनराशि में इनका खर्च चलना मुश्किल हो जाता था। कभी-कभी ट्रेनों और बसों में चढ़कर भी यह धन उगाही करने लगते, लेकिन ऐसे हिजड़ों का पता चलते ही उन्हें बिरादरी से बहिष्कृत करने जैसा दंड भी गुरुजी द्वारा दे दिया जाता क्योंकि उनके समुदाय में भीख मांगना, चोरी हिंसा करना भयंकर पाप माना जाता है।"[5]

आर्थिक स्तर पर विपन्न होने के बावजूद भी देशभक्ति, धर्मनिरपेक्षता आदि पर उनके विचार उन्हें और भी महान बना देते हैं। नाजबीबी मानवी के प्रश्न के जवाब में कहती है– "अपने देश के लिए तो देखिए, हम लोग मर मिटेंगे। जिस तरह फौज में एक सिपाही भर्ती होता है, पुलिस होता है

[illegible] [illegible] भी हथियार ले ले। मैं तो लड़ूँगी। लड़ते-लड़ते हिंदुस्तान के [illegible] अपनी जान दे दूँगी। बस मेरी यही तमन्ना है। मैं भेजा की लड़की हूँ, देश की।" उसकी इसी भावना एवं विचारों को देखते हुए मानवी भी [illegible] कजरीबाई का संकल्प उसके चुनाव में खड़े होने को मानती है। और कजरीबाई देश हित के लिए तत्पर मानवी को कहती है "जैसा कहोगी [illegible] वैसा ही होगा। जैसा भी काम होगा, मैं जनता की भलाई के लिए करूंगी क्योंकि अपने तो आगे पीछे कोई नहीं है जिसके लिए दूसरों की तिजोरियां तोड़ूँगी और अपना घर भरूंगी। जरूरत पड़ी तो भ्रष्ट लोगों के खिलाफ हथियार भी उठाऊंगी। हर गंदगी को जड़ से साफ कर दूँगी। दुनिया में शांति रहे, और क्या चाहिए किसी को?"[7]

नीरजा जी ने 'यमदीप' में किन्नरों के रीति-रिवाज उनकी भाषा-शैली पर विस्तार से वर्णन किया है। नाजबीबी मानवी को बताती है कि – "हम लोगों की एक बेसरा माता है यानी हिजड़ों की देवी। उनका मंदिर अहमदाबाद में है। वहीं गुजरात में। तो वर्ष में एक बार वहां हम सब लोग जुटते हैं। भंडारा करते हैं, नाचते गाते हैं। यानी एक साथ दो चार दिन रहते हैं। हर जिले में हम लोगों के एक गुरु होते हैं। हम लोग जो रोज,कमाई करते हैं, उसका एक बड़ा हिस्सा बेसरा माता के नाम पर गुरुजी के पास जमा करते जाते हैं। उसी में से सब मिलाकर हो जाता है।"[8] हिजड़ों की अपनी एक सांकेतिक भाषा होती है। प्रतीकात्मक एवं संकेत भाषा के प्रयोग द्वारा लेखिका शिल्प को विशिष्टता प्रदान करती हैं। डॉ. विजेंद्र प्रताप सिंह ने अपने लेख में इसे स्पष्ट किया है – "नीरजा माधव ने 'यमदीप' में से चाय के लिए भांपकी, रिक्शा के लिए लुढ़कनी, ढोल के लिए डामरी, लड़की के लिए टेपकी, घुंघरू के लिए छमकने, पुरुषवेश के लिए कड़े ताल में, पिता के लिए सुड्डा, माता के लिए सुड्डी, सौ रुपये के नोट के लिए बड़मा, रखैल हिजड़ा के लिए कोती, किसी को टालने के लिए चिस्सर पतवाईदास आदि शब्द इनके दैनंदिन भाषा का हिस्सा है जिसे लेखिका नीरजा माधव ने पूरी खोजबीन के साथ प्रस्तुत किया है। हिजड़ों की अनेक सांकेतिक भाषा जैसे– सेवा-समाखन, निहारन, वीला, पानकी, कातका, धौंकनी आदि अनेक नए शब्दों से लेखिका रूबरू करवाती हैं।"[9]

[illegible]

संदर्भ

1. नीरजा माधव : 'यमदीप', सुनील साहित्य सदन, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण 2009, भूमिका पृ. 6
2. वही, पृ.6
3. नीरजा माधव : 'यमदीप', सुनील साहित्य सदन, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण 2009, पृ. 13
4. वही, पृ. 93
5. वही, पृ. 42
6. वही, पृ. 163
7. वही, पृ. 288
8. वही, पृ.164
9. डॉ. विजेंद्र प्रताप सिंह : हिंदी उपन्यासों के आईने में थर्ड जेंडर, (नीरजा माधव कृत 'यमदीप') अमन प्रकाशन, कानपुर, सं. 2017, पृ. 27